International Journal of Social Research and Development
www.socialsciencejournal.net
Online ISSN: 2664-8709, Print ISSN: 2664-8695
Received: 25-04-2021; Accepted: 11-05-2021; Published: 28-05-2021
Volume 3, Issue 1, 2021, Page No. 26-29

दीनदयाल उपाध्याय जी की पोषणीय समाज की संकल्पनाः एक भौगोलिक अध्ययन

Dr. Rajesh Yadav
MA (Geography, Economics), NET (Geography), PGDDM, B.ED, Phd (Geography), Sr. Geographer, Government of India, Ministry of Home Affairs, Office of The Registrar General and Census Commissioner, New Delhi, India

सारांश
प्रस्तुत अध्ययन में दीनदयाल उपाध्याय जी की पोषणीय समाज की संकल्पना का विश्लेषण किया गया है। इस शोध पत्र में दीनदयाल जी का संक्षिप्त जीवन परिचय, उनकी समाज की आत्मनिर्भरता का अर्थ, एकात्म मानव दर्शन, अखण्ड भारत एवं अखण्ड मण्डलाकार व्यवस्था एवं दीनदयाल जी के अन्त्योदय विचार का बड़े ही विस्तार से चर्चा की गई है। दीनदयाल जी के अनुसार शिक्षा एवं चिकित्सा, प्रत्येक खेत को पानी के साथ ही प्रत्येक हाथ को काम की भी वकालत करते थे, इन सबका भी इस शोध पत्र में विश्लेषण किया गया है। इसके अलावा दीनदयाल जी का आर्थिक चिंतन, कृषि व्यवस्था एवं कुटीर उद्योग, भारतीय संस्कृति, धार्मिक संकल्पना एवं दीनदयाल जी के अनुसार उनकी पोषणीय पर्यावरण के प्रति विचारों का भी बड़े ही तथ्यों के साथ तार्किक विश्लेषण किया गया है।

मुख्य शब्दः पोषणीय समाज, आत्मनिर्भरता, एकात्म मानव दर्शन, अखण्ड भारत, अंत्योदय, संस्कृति।

प्रस्तावना

अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन का मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित है–

1. दीनदयाल उपाध्याय जी की पोषणीय संकल्पना का विश्लेषण करना।
2. दीनदयाल जी के मौलिक विचारों जिसमें भारतीय संस्कृति, एकात्म मानव दर्शन तथा उनकी सामाजिक विचार को जनमानस से परिचित कराना।
3. दीनदयाल जी के विचार वर्तमान परिस्थितियों में भी प्रमुखता से प्रासंगिक है, उसका भी विश्लेषण करना है।

आंकड़ा स्रोत एवं विधितंत्र

प्रस्तुत अध्ययन में द्वितीयक आंकड़ों का उपयोग किया गया है। इसके लिए इण्टरनेट, विकीपीडिया, विभिन्न शोध पत्रों को भी आधार बनाया गया है। इस शोध पत्र में विश्लेषणात्मक विधि का प्रयोग किया गया है।

दीन दयाल जी का संक्षिप्त जीवन परिचय

दीनदयाल जी का जन्म 25 सितम्बर, 1916 को मथुरा जिले के 'नगला चन्द्रभान' नामक गांव में हुआ था। इनके पिता का नाम भगवती प्रसाद उपाध्याय था तथा उनकी माता का नाम रामप्यारी था जो धार्मिक प्रवृत्ति की थी। इनके पिता रेलवे में जलेसर रोड स्टेशन के सहायक स्टेशन मास्टर थे। इनके छोटे भाई का नाम शिवदयाल था। दीनदयाल जी का अधिकतम समय इनके नाना जी के यहां व्यतीत हुआ। इनका बचपन संघर्ष भरा था। सिर्फ 19 वर्ष की आयु में ही इन्होने मृत्यु दर्शन का गहन साक्षात्कार कर लिया था क्योंकि सिर्फ 3 वर्ष के नही हुए थे कि इनकी माता का निधन हो गया। उसके बाद जब वे 7 वर्ष के थे तो इनके पिता स्वर्ग सिधार गए। इनके नाना–नानी, इनकी मामी जो इनका पालन कर कर रही थी तथा इनका प्रिय भाई भी असमय ही इनको छोड़कर स्वर्ग सिधार गए। इन्होंने हाईस्कूल एवं इण्टरमीडिएट की परीक्षा में स्वर्ण पदक प्राप्त किया। ये एक कुशल संगठक होने से साथ–साथ अच्छे लेखक एवं पत्रकार भी थे। भारत माता का यह सपूत जिसने अपना पूरा जीवन देश की सेवा को समर्पित कर दिया था, 11 फरवरी, 1968 की रात्रि में मुगलसराय स्टेशन पर 52 वर्ष की अल्पायु में ही सदा–सदा के लिए भारत माता की गोंद में सो गए।

दीनदयाल जी की समाज की आत्मनिर्भरता का अर्थ

दीनदयाल जी आत्मनिर्भर का अर्थ यह नही लेते थे कि वह अपनी सामग्री स्वयं उत्पादित कर संसार से अछूता रह जाय, अलग पड़ जाय। आत्मनिर्भरता की उनकी अवधारणा यह थी कि अन्य कोई राष्ट्र अपने देश को डिक्टेट न कर सके। समानता के आधार पर अपना देश लेन–देन का व्यापार दूसरे राष्ट्रों से कर सके। उनके अनुसार यह तभी सम्भव है जब कि देश स्वतंत्र भी हो और आर्थिक दृष्टि से वह स्वावलम्बी भी हो। हमारी आर्थिक व्यवस्था प्रजातंत्री ढांचे को बनाए रखनी चाहिए। इस तरह से दीनदयाल जी आत्मनिर्भरता को बड़े ही व्यापक रूप में लेते थे। वे केवल वृहद उद्योगों के माध्यम से औद्योगिक भारत को कुछ स्थानों पर लघु तथा कुटीर उद्योगों के द्वारा देश के सभी क्षेत्रों में आर्थिक प्रगति के लाभ, उद्योगों में रोजगार सृजन की क्षमता बढ़ाना आवश्यक मानते थे।

एकात्मक मानव दर्शन

भारतीय जनसंघ के इतिहास में एक ऐतिहासिक घटना 1965 के विजयवाड़ा अधिवेशन में हुई। दीन दयाल जी द्वारा एकात्मक मानव दर्शन की संकल्पना 22 से 24 अप्रैल 1965 को मुम्बई में इसी अधिवेशन में रखा गया। इस अधिवेशन में उपस्थित सभी प्रतिनिधियों ने इस एकात्म मानव दर्शन को स्वीकार किया। दीनदयाल जी ने एकात्म मानववाद को सम्पूर्ण सृष्टि का एक मात्र दर्शन बताते हुए मानव शांति, राजनैतिक, सामाजिक और अर्थनीति के जिन सिद्धांतो को जनता के सामने रखा वह अतुलनीय व अद्भुत है।

भारतीय ऋषि मुनियों ने जिस प्रकार कहा भद्रम पश्यन्ति ऋषयः, ऋषि वह है, जो लोक कल्याण को देखता है और लोक कल्याण वह है जो

किसी व्यक्ति समुदाय के लिए नही व्यक्ति विश्व के लिए जगत और सबके कल्याण की कामना के लिए हो। दीनदयाल जी का एकमात्र मानव दर्शन सैद्धांतिक एवं व्यवहारिक दोनों ही दृष्टि से एक सदकालिक एवं सार्वभौमिक जीवन दर्शन है। इस दर्शन के अनुसार मानव ब्रह्मण्ड के केन्द्र में अवस्थित रह कर एक सर्पलाकार मण्डलाकृति के रूप में अपने स्वयं के अतिरिक्त क्रमशः परिवार, समुदाय, समाज, राष्ट्र एवं विश्व के प्रति अपने बहुपक्षीय उत्तरदायित्यों का निर्वहन करता हुआ प्रकृति के साथ संग्रहित होता हुआ एकीकृत हो जाता है।

अखण्ड भारत एवं अखण्ड मण्डलाकार व्यवस्था

दीनदयाल जी देश के विभाजन से बहुत दुःखी थे। नेपाल और ब्रम्हदेश भारत से अलग हुए तो भारत की जनता ने इसे विभाजन नही माना। इसका कारण उन्होंने बताया कि अपने भारतीय समाज के प्रति एकात्मकता का भाव जब विद्यमान रहता है तो देश की सांस्कृतिक धारा विभाजित नही होती। दीनदयाल जी इण्डोनेशिया और थाइलैण्ड का उदाहरण देते थे कि उन देशों मे मुस्लिम मज़हब की प्रधानता होते हुए भी उनके नाम सुकर्णो है, सुहार्तो हैं। उनके वायुयान सेवाओं के नाम गरूण एयरवेज है। किन्तु पाकिस्तान के निर्माण को बंटवारा कहा गया। यह विभाजन राष्ट्र की सांस्कृतिक एकात्मता का बंटवारा था।

दीनदयाल जी की सर्वाधिक सामाजिक–राजनैतिक देन उनकी अखण्ड मण्डलाकार व्यवस्था है। उनका विचार था कि छोटी इकाई से ही बड़ी इकाई उद्भूत होती है। इस तरह व्यक्ति परिवार से, परिवार कुल से, कुल ग्राम से ग्राम समुदाय से जुड़ता हुआ राष्ट्र तक पहुंचता है। राष्ट्र और विश्व में भी टकराहट की संकल्पना को वे स्वाभाविक नही मानते थे। दीनदयाल जी की मान्यता थी कि राष्ट्रीयता से ही अन्तर्राष्ट्रीयता विकसित होती है।

उनका मानना था कि पशु सृष्टि से ऊपर उठकर मानवता और नर से नारायण तक बनने की संकल्पना में सर्वभूत के हित समाविष्ट हैं।

दीनदयाल जी का अंत्योदय विचार

दीनदयाल जी का सर्वाधिक बल अन्तिम व्यक्ति की उन्नति की भावना से अनुप्राणित अंत्योदय कार्यक्रम पर केन्द्रित था। अंत्योदय का अर्थ है–समाज की 'अंतिम पंक्ति के व्यक्ति का उदय' जिसका सरल भावार्थ है पिछड़े लोगों का उत्थान करना। गरीबों और पिछड़े लोगों को समाज के दूसरे वर्गों के समान लाना।

उनका कहना था कि जब तक व्यक्ति की भूख नही मिटाई जाती व उसे उसकी मूलभूत सुविधाएं उपलब्ध नही कराई जाती हैं तब तक वह न तो अपने प्रति न जिन्दगी के प्रति अपने उत्तरदायित्व पूर्ण कर पाएगा और न ही परिवार, समाज व राष्ट्र के प्रति। अतः इन सुविधाओं को उपलब्ध कराना राष्ट्र का प्रथम कर्तव्य है। उन्होंने अपनी पुस्तक में लिखा है कि घर गृहस्थी के चक्र में फंसे हुए किसी सामान्य व्यक्ति से जब आप देश, धर्म, साहित्य आदि की चर्चा करें तो उसके मुख से यही लोकोक्ति निकलेगी–

भूल गए राग रंग, भूल गए छकड़ी।।
तीन चीज याद रही, नोन, तेल, लकड़ी।

वर्तमान समाज का यही चित्रण है जिसमें बहुजन समाज अपने पेट भरने की चिंता में ही सुबह से शाम करते हुए दिन, महीने और वर्ष बिताता हुआ अपने जीवन की घड़िया काट जाता है। जीवन के और विचार उसके सामने कभी प्रमुख रूप से आते ही नही। मराठी में एक कहावत है 'आधी पोटोबा मग विठोबा' जिसका अर्थ है कि गरीब आदमी पहले भोजन और फिर भजन की चिंता करता है। हिन्दी में भी कहा जाता है कि 'भूखे भजन न होई गोपाला' अर्थात् जब पेट की भूख शांत नही होगी तब तक भजन नही हो पाएगा। इस तरह से दीनदयाल जी यह मानते थे कि समाज के अंतिम व्यक्ति का विकास ही राष्ट्र का सही विकास होता है।

अपने देश में कोरोना काल के लॉकडाउन समय में दीनदयाल जी की यह अंत्योदय पूरी तरह से समझ में आया तथा देखा गया कि जो व्यक्ति समाज के अंतिम पायदान पर खड़ा है वह सिर्फ पहले 21 दिन के लॉकडाउन में ही सड़क पर आ गया। समाज के ऐसे लोगों पर ध्यान देकर पोषणीय समाज की संकल्पना को बेहतर बनाया जा सकता है।

दीनदयाल जी के अनुसार शिक्षा एवं चिकित्सा

दीनदयाल जी शिक्षा एवं चिकित्सा जैसी मूलभूत सुविधाओं को आम जनता के लिए निःशुल्क देने की बात करते थे। शिक्षा एक ऐसा माध्यम है जिसके सहारे समाज का कोई भी व्यक्ति अपना सर्वांगीण विकास कर सकता है। यदि व्यक्ति स्वस्थ होगा तो उसका मन अपने प्रति अपने परिवार के प्रति तथा अपने राष्ट्र के प्रति भी सोच सकता है। दीनदयाल जी समाज के प्रत्येक वर्ग के विकास की बात करते थे तथा कहा करते थे कि जिस प्रकार भवन निर्माण में पहले छत नही बनाई जा सकती, भवन की नींव से ही उसका प्रारम्भ करना होता है। उसी प्रकार समाज के निर्माण में भी सबसे निचले व पिछड़े वर्गों से ही प्रयास करने होंगे।

प्रत्येक खेत को पानी प्रत्येक हाथ को काम

दीनदयाल जी ने प्रत्येक खेत को पानी तथा प्रत्येक हाथ को काम का विचार भी दिया। यह विचार उनके पोषणीय समाज की संकल्पना को और भी मजबूती प्रदान करती है। आज का भारत उनके सपने को साकार करते नजर आ रहा है। पिछले वर्षों के दौरान कृषि से सम्बन्धित सुधारों को लेकर तथा सिंचाई से सम्बन्धित योजनाओं से प्रत्येक खेत को पानी का सपना साकार हो रहा है। वर्तमान भारत में विभिन योजनाओं के द्वारा प्रत्येक हाथ को काम देने का भी सरकार द्वारा सराहनीय प्रयास जारी है।

दीनदयाल जी का आर्थिक चिंतन

दीनदयाल जी का अर्थचिंतन भारतीय परिस्थितियों के अनुरूप एकात्म मानववाद पर आधारित है। दीनदयाल जी की पुस्तक 'भारतीय अर्थनीतिः विकास की एक दिशा' उनके आर्थिक चिंतन पर प्रकाश डालती है। इसमें उन्होंने एकात्म मानव के अर्थायाम की व्याख्या करने का प्रयास किया है। समाज से अर्थ के प्रभाव और अभाव दोनों को मिटाकर उसकी समुचित व्यवस्था करने को अर्थायाम की संज्ञा दी गई। उनके चिंतन का लक्ष्य पूर्ण रोजगार, आर्थिक विषमताओं की समाप्ति के केन्द्रीयकरण का विरोध होते हुए भी वे मार्क्स के साम्यवादी विचारों के विरोधी थे। उन्होंने विभिन्न आर्थिक समस्याओं का हल भारतीय सांस्कृतिक विचारों एवं परम्पराओं के आलोक में ही खोजने की कोशिश की है।

दीनदयाल जी व्यक्ति की चार मूल आकांक्षाओं अर्थ, धर्म, काम और मोक्ष में कोई विरोध नही देखते। वे व्यक्ति की भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति को आवश्यक मानते हैं। किंतु मनुष्य केवल भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति करके संतुष्टि को प्राप्त नही कर सकता।

दीनदयाल जी के अनुसार अर्थव्यवस्था का लक्ष्य लोगों के भरण–पोषण, जीवन के विकास एवं राष्ट्र के लिए भौतिक साधनों को उतना ही उत्पादन होना चाहिए जितनी आवश्यकता है। दीनदयाल जी प्रकृति के संतुलित दोहन के पक्षधर थे। वे प्रकृति का शोषण नही बल्कि पोषणीय समाज के लिए उसका संतुलित उपयोग चाहते थे।

दीनदयाल जी ने यह भी आगाह किया था कि प्राकृतिक सम्पदा सीमित है। यदि उसके उत्पादन को असीमित रूप से बढ़ाया जाएगा तो प्राकृतिक सम्पदा लम्बे समय तक साथ नही देगी। उनके अनुसार

वर्तमान अर्थव्यस्था इसे असंतुलित कर रही है। हमें प्रकृति से उतना ही लेना चाहिए जिसकी वह पूर्ति कर सके।

कृषि अर्थव्यस्था एवं कुटीर उद्योग

दीनदयाल जी का मानना था कि कृषि जोत का स्वामित्व स्वयं कृषक होना चाहिए। उन्होंने सहकारी कृषि पर बल दिया। उनके अनुसार खाद्यान्न व्यवसाय का राष्ट्रीयकरण नही होना चाहिए। वे भारतीय अर्थव्यस्था के स्वावलम्बन के पक्ष में थे। वे कहा करते थे कि मशीन के उपयोग से बेरोजगारी बढ़ती है तो उसका उपयोग सीमित मात्रा में होना चाहिए। उनके अनुसार कुटीर उद्योग भारतीय अर्थव्यवस्था का आधार है एवं विकेन्द्रीकृत अर्थव्यवस्था विकास के लिए आवश्यक है। उनके अनुसार 'कमाने वाला खाएगा' की जगह 'खाने वाला कमाएगा' का लक्ष्य रखकर भारत की अर्थव्यस्था को मजबूत करना चाहिए। दीनदयाल जी चाहते थे कि नया युग श्रम का युग है। इस तरह से उन्होंने मानव के संतुलित विकास पर बल दिया।

दीनदयाल जी का विचार है कि जैसे अर्थ का अभाव समाज में विस्फोटक स्थिति पैदा करता है, ठीक वैसे ही अर्थ का प्रभाव भी श्रेयस्कर नही है। उनके अनुसार अर्थ से अनर्थ की सम्भावना अधिक रहती है। यदि अर्थ साध्य हो जाये तो वह एक जीवन मूल्य बन जायेगा। उन्होंने बताया था कि समाज का जीवन लक्ष्य उपभोग हो जाएगा तो अर्थ का अभाव ही बना रहेगा। संतुष्टि मन का धर्म है। उसके अभाव में चाहे जितनी भी सम्पन्नता आए वह कम ही रहेगी। अर्थ का यह प्रभाव भी अर्थ के अभाव को पैदा कर देता है। समाज की योग्य व्यवस्था को अर्थायाम की संज्ञा दी जा सकती है। इसमें न तो अर्थ का प्रभाव हावी होगा और न अर्थ का अभाव ही। उनके अनुसार अर्थ को गौण नही माना जा सकता। अर्थ आवश्यक है किन्तु अर्थशास्त्र में इस महत्व को स्वीकार करते हुए भी उनका मत था कि अर्थ सब कुछ नही है। वह धर्म पर आधारित होना चाहिए।

दीनदयाल जी के अनुसार भारतीय संस्कृति

दीनदयाल जी के मतानुसार राष्ट्रीय दृष्टि से तो हमें अपनी संस्कृति का विचार करना ही होगा क्योंकि वह हमारी अपनी प्रकृति है, स्वराज्य का स्वसंस्कृति से घनिष्ठ सम्बन्ध रहता है। उन्होंने बताया था कि यदि संस्कृति का विचार न रहा तो स्वराज्य की लड़ाई स्वार्थी और पदलोलूप लोगों की राजनीतिक लड़ाई मात्र रह जाएगी। स्वराज तभी साकार और सार्थक होगा, जब वह अपनी संस्कृति की अभिव्यक्ति का साधन बन सकेगा।

दीनदयाल जी के अनुसार भारतीय संस्कृति की पहली विशेषता यह है कि वह सम्पूर्ण जीवन का, सम्पूर्ण सृष्टि का संकलित विचार करती है, उसका दृष्टिकोण एकात्मवादी है। टुकड़े–टुकड़े में विचार करना विशेषज्ञ की दृष्टि से ठिक हो सकता है परन्तु व्यवहारिक दृष्टि से उपयुक्त नही है।

संस्कृति से सन्दर्भित दीनदयाल जी की विचारधारा व्यापक थी। उनके अनुसार 'हिन्दू कोई धर्म या सम्प्रदाय नही बल्कि भारत की राष्ट्रीय संस्कृति है।' उन्होंने बताया था कि 'सांस्कृतिक विविधता ही भारत माता की ताकत है और इसी बूते पर वह एक दिन विश्व मंच पर अगुआ राष्ट्र बनेगा। भारत की सांस्कृतिक विरासत पूरी दुनिया को प्रकाशमान कर रही है और शायद वह दिन दूर नही जब भारत विश्वमंच पर पूरी दुनिया को राह दिखाने वाला होगा। वर्तमान समय में दीनदयाल जी के विचार को देश इस कोरोनाकाल में दुनिया को राह दिखाते हुए विश्व गुरू बनने की ओर अग्रसर है। इस समय भारत कोरोना वैक्सीन तथा अन्य जरूरी दवाएं विभिन्न देशों को उपलब्ध कराकर पोषणीय समाज की संकल्पना को सार्थक बनाया है।

दीनदयाल जी के अनुसार संस्कृति के बिना राष्ट्र निष्प्राण है। उन्होंने विचार व्यक्त किया कि–

'संस्कृति साधारणतया किसी भी राष्ट्र की आत्मा होती है और कोई भी राष्ट्र तभी तक जीवित माना जा सकता है जब तक उसकी आत्मा उसके भीतर विद्यमान है। केवल वाह्य उपकरणों से राष्ट्र जीवित नही रहता। संस्कृति राष्ट्र की अमूल्य धरोहर है। उन्होंने लोगों को सचेत किया कि 'संस्कृति समाप्त हो गई तो राष्ट्र जीवन का अंत समझना चाहिए। जिस प्रकार आत्मा निकल जाने के पश्चात अत्यन्त हृष्ट पुष्ट शरीर भी किसी अर्थ का नही रहता, उसी प्रकार संस्कृति के समाप्त होने के बाद अन्य तत्व शेष नही रहे तो भी राष्ट्र नष्ट हो जाता है।'

उनका विचार था कि हमें अपनी संस्कृति के प्रति सजग होना चाहिए ताकि सांस्कृतिक विरासत अगली पीढ़ीयों में हस्तांतरित हो सके। भारतीय संस्कृति का लक्ष्य है–

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्चयन्तु मा कश्चिद् दुखभाग भवेत्।।'

यह हमारी संस्कृति का अनुपम आदर्श है। दीनदयाल जी के विचारों का भी केन्द्र 'सर्वजन कल्याण' था। इस तरह से दीनदयाल जी ने भारतीय संस्कृति के पुनरूत्थान पर अपना ध्यान केन्द्रित किया।

धार्मिक संकल्पना

दीनदयाल जी यह मानते थे कि धर्म का अनुवाद रिलीजन नही किया जा सकता है। धर्म धारणा से बनता है। रिलीजन का अर्थ मत पंथ, उपासना पद्धति से आता है। इसके अनुवाद की भूल के सम्बन्ध में उन्होंने लिखा है कि 'धर्म के सम्बन्ध में जो विकृति आज चारों ओर दिखाई पड़ती है। उसका अन्य कारणों के साथ एक बड़ा कारण विदेशी शिक्षा भी है। अंग्रेजी के शब्द रिलीजन ने धर्म सम्बन्धी शुद्ध अर्थ को खराब करने में बहुत सहायता की है। उन्होंने धर्म का अनुवाद कर दिया रिलीजन।'

'धर्म धारण से है' नामक लेख में दीनदयाल जी रिलीजन को पन्थ या सम्प्रदाय की संज्ञा देते हैं। यह पूजा करने की एक पद्धति है। उनके अनुसार जिस शक्ति के कारण, जिस व्यवस्था के कारण कोई चीज टिकी रहे वह धर्म है। इस प्रकार जो शरीर को बनाए रखे वह शरीर धर्म, जो समाज को बनाए रखे वह समाज धर्म है। इस आधार पर वे आचार को परमधर्म मानते थे।

दीनदयाल जी ने धर्म को भी पोषणीय माना है। उन्होंने धर्म को भेदकारक नही माना है। वे सामंजस्य बैठाने वाली परम्परानुकूल व्यवस्था को ही धर्म मानते रहे हैं। उनके अनुसार संघर्ष विकृति का परिणाम है और धर्म इस प्रकार की विकृतियों को दूर करने वाला एवं सनातन और सर्वव्यापी प्रयास है।

पोषणीय पर्यावरण के प्रति विचार

दीनदयाल जी सन् 1960 में अपने उत्कृष्ट व्याख्यान के दौरान कहा की मानव को प्रकृति की ओर जाना चाहिए किन्तु जब मानव को प्रकृति पर विजय पाने की आकांक्षा होगी तो पर्यावरण अपना संतुलन खो देता है। दीनदयाल जी ने बताया कि व्यष्टि यानी व्यक्ति, समष्टि यानी समाज, परमाष्टि यानी परमात्मा का नाम ही मानव है। उनका मानना था कि मानव प्रकृति का हिस्सा है। पोषणीय पर्यावरण की संकल्पना से सम्बन्धित पूरे विश्व में विभिन्न सम्मेलन एवं संगोष्ठियों का आयोजन होता रहा है। सन् 1992 में ब्राजील के रियो डी जेनेरियों शहर में विश्व के 172 देशों के द्वारा पृथ्वी सम्मेलन का आयोजन किया गया था। इसके बाद सन् 2002 में दक्षिण अफ्रिका के शहर जोहान्सबर्ग में पृथ्वी सम्मेलन का आयोजन किया गया। इसमें विश्व के सभी देशों को पर्यावरण संरक्षण पर ध्यान देने के लिए जोर दिया गया था। इसमें सतत विकास लक्ष्य की ओर भी ध्यान आकर्षित किया गया था। प्रोफेसर सविन्द्र सिंह (2008) के अनुसार उपर्युक्त सम्मेलन में 9000 प्रतिनिधियों

ने भाग लिया था तथा विचार विमर्श के लिए 225 घण्टे खर्च किए गए थे। पृथ्वी सम्मेलन में गरीबी , उन्मूलन, व्यापार, जैव विविधता, जल एवं गैर परम्परागत ऊर्जा, सुशासन, सतत पोषणीय उत्पादन एवं खपत आदि मुद्दों पर विस्तार से चर्चा की गई थी।

निष्कर्ष

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि दीनदयाल जी ने पोषणीय समाज की संकल्पना का जो विचार दिया था उसे वर्तमान समय में चरितार्थ किया जा रहा है। आज विश्व की एक बड़ी आबादी गरीबी में जीवन यापन कर रही है। विश्व भर में विकास के कई मॉडल है लेकिन किसी से भी आशानुरूप परिणाम नही मिला। दुनिया को एक ऐसी मॉडल की तलाश है जो एकीकृत एवं संधारणीय हो। दीनदयाल जी का पोषणीय समाज की संकल्पना तथा एकात्म मानव दर्शन ऐसा ही एक दर्शन और अपनी प्रकृति में एकीकृत है।

वर्तमान समय में भारत में विभिन्न योजनाओं जैसे कि दीनदयाल अंत्योदय योजना, दीनदयाल ग्रामीण योजना, प्रधानमंत्री आवास योजना ग्रामीण तथा प्रधानमंत्री योजना शहर, स्वच्छ भारत अभियान, प्रधानमंत्री जनऔषधि योजना, प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना, दीनदयाल ग्राम ज्योति योजना, डॉ० श्यामा प्रसाद मुखर्जी राष्ट्रीय अर्बन योजना, अटल पेंशन योजना, जीवन ज्योति बीमा योजना, प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना, प्रधानमंत्री सिंचाई योजना, कुसुम योजना आदि सभी योजनाओं के माध्यम से देश के अंतिम पायदान पर रह रहे अभावग्रस्त वर्ग के लोगों को जीवन की मूलभूत सुविधाओं को उपलब्ध कराकर भारत द्वारा दीनदयाल जी के पोषणीय समाज की संकल्पना के सपनों को नया भारत पूरा करने का सराहनीय प्रयास कर रहा है।

आभार

मैं प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से इस शोध पत्र को लिखने में उन सभी लोगों का विशेष धन्यवाद ज्ञापित करता हूं–

- सर्वप्रथम मैं गोरखपुर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो० राजेश सिंह का आभार व्यक्त करता हूं जिन्होंने भारत के एक महान विचारक पं० दीनदयाल उपाध्याय जी पर आधारित दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर में 12–14 फरवरी, 2021 के दौरान 'ष्पं. दीनदयाल उपाध्याय का एकात्म मानववादरू सतत विकास के लिए एक व्यवहार्य मार्ग "Pt- Deen Dayal Upadhyaya's Integral Humanism: A Viable Pathway to Sustainable Developmentß during February 12 &14] 2021.' विषय पर अंतर्राष्ट्रीय वेबिनार सह सेमिनार (International Webinar cum Seminar) का भव्य आयोजन करने के लिए।
- मैं प्रो० शिवाकान्त सिंह, समन्वयक, सह समन्वयक डॉ० अनुराग द्विवेदी तथा डॉ० सर्वेश कुमार का ह्रदय से धन्यवाद ज्ञापित करता हूं जिन्होंने मुझे इस International Webinar cum Seminar में विशिष्ट व्याख्यान (Specific lecture) के लिए जिसमें तकनीकी सत्र, जिसका विषय था 'आत्मनिर्भरता का विचार संपोषित समाज का एक मार्ग' में मेरे द्वारा ऑनलाइन विशिष्ट व्याख्यान Session & 3 Sub Theme: UN&SDG and Sustainable Society] 13/02/2021 को आमंत्रित करने के लिए।
- मैं प्रो० के० एन० सिंह, पूर्व कुलपति, उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश, का भी आभारी हूं जिनका लेक्चर सुनने का अवसर प्राप्त होता रहा है। प्रो० सिंह का भौगोलिक लेक्चर हो या किसी भी विषय पर, बहुत ही विश्लेषणात्मक एवं प्रभावपूर्ण होता है।
- अंत में मैं उन सभी स्रोतों के लेखकों, प्रकाशकों, विद्वानों का भी आभार व्यक्त करता हूं जिनके उत्तम विचारों एवं उत्कृष्ट लेखों का साहित्य अनुशीलन किया।

संन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. खालसा, मनदीपः ''पं० दीनदयाल दपाध्याय के आर्थिक चिंतन का समीक्षात्मक विश्लेषण'', PARIPEX, Indian Journal of Research, ISSN No. 2250–1991, Pages-2019:8(3):68.
2. बानो, गुलशनः ''पं० दीनदयाल उपाध्याय के विचारों का राष्ट्रीय, आर्थिक एवं सामाजिक विकास में योगदान'' स्वरांजलि पब्लिकेशन, 2018, 68-70
3. देवी, अनिताः ''पं० दीनदयाल दपाध्याय के जीवन व्यक्तित्व कृतिव एवं विचार'' स्वरांजलि पब्लिकेशन, 2018, 63-67.
4. गौतम, लक्ष्मी एवं समीर कुमार जायसवालः ''आधुनिक भारत के निर्माता के रूप में पं० दीनदयाल दपाध्याय : एक ऐतिहासिक अध्ययन'' Institute of Oriental Philosphy, Vrindavan, Mathura, 2014.
5. वर्मा, सौरभः '' पं० दीनदयाल दपाध्यायः एकात्म मानव दर्शन तथा आर्थिक विचार'' स्वरांजलि पब्लिकेशन, 2018, 124-126.
6. त्रिपाठी, अनुभव नाथः '' पं० दीनदयाल जी के प्र्यावरणीय सत्त विकास परिकल्पना का एकात्म चिंतन'' स्वरांजलि पब्लिकेशन, 2018, 127-131.
7. सिंह, सविन्द्रः ''पर्यावरण भूगोल'' प्रयाग पुस्तक भवन, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश, 2008, 570.
8. https://glibs.in/MISC/Indian-approach-to-the-fundamentals-of-Pandit-Deendayal-Upadhyaya-54209.html accessed on 05.02.2021.
9. http://conference.nrjp.co.in/index.php/DDU_SHAHJAHANPUR/issue/view/3 accessed on 06.02.2021.
10. http://deendayalupadhyay.org/samaj_vigyan_book.html accessed on 06.02.2021.
11. https://www.readwhere.com/read/672256/Bharatiya-Artha-Niti/Tue-Dec-22,-2015#page/52/2 accessed on 06.02.2021.